1

देह, प्राण और आत्मा

मानवीय जीव पशुओं से भिन्न हैं, क्योंकि हम अतीत को याद कर सकते हैं, इसे वर्तमान और भविष्य से जोड़ सकते हैं और मृत्यु के बाद जीवन की सम्भावना पर चकित हो सकते हैं। उपलब्ध जानकारी को इकट्ठा करके हम यह मान सकते हैं कि जीवन का कोई उद्देश्य है और इस जीवन के बाद हमारे लिए किसी प्रकार का अस्तित्व प्रतीक्षा कर रहा है।

हमारी मीरास

संसार में मृत्यु पाप के कारण आई (उत्पत्ति 3:17-19; रोमियों 5:12; 1 कुरिन्थियों 15:22)। यह सर्प की बात सुनने के कारण आदम और हव्वा को परमेश्वर की ओर से मिला दण्ड था, जिन्होंने शैतान के झूठ को सच मान लिया था (यूहन्ना 8:44) कि ''तुम निश्चय न मरोगे'' (उत्पत्ति 3:4)। पाप करते ही वे आत्मिक रूप से मर गए (रोमियों 6:23; 1 तीमुथियुस 5:6; याकूब 1:15), और शारीरिक रूप से मरना आरम्भ हो गए, क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें जीवन के वृक्ष से दूर कर दिया (उत्पत्ति 3:22, 23)। परमेश्वर ने आदम से कहा, ''तू मिट्टी तो है और मिट्टी ही में फिर मिल जाएगा'' (उत्पत्ति 3:19)।

आदम और हव्वा को परमेश्वर की प्रतिज्ञा कि वे ''अवश्य मर'' जाएंगे (उत्पत्ति 2:17) उनकी सब पीढ़ियों के लिए भी है। बेशक हम पढ़ते हैं कि ''मनुष्यों के लिए एक बार मरना ... नियुक्त है'' (इब्रानियों 9:27), इस सच्चाई को परमेश्वर से जानने की आवश्यकता नहीं है। पहली मृत्यु (हाबिल की; उत्पत्ति 4:8) से अब तक, मृत्यु हर मनुष्य का अन्त रही है। हनोक (उत्पत्ति 5:24; इब्रानियों 11:5) और एलिय्याह (2 राजा 2:11) ही इसके एकमात्र अपवाद हैं, जिन्हें सीधे स्वर्ग में ले लिया गया था।

जिज्ञासु जीव होने के कारण हमारे लिए यह पूछना स्वाभाविक ही है कि ''मरने पर क्या होता है? क्या हमारी *बनावट* में कुछ ऐसा है जो शरीर की मृत्यु के बाद भी रहेगा? मृत्यु के पश्चात हम कैसे होंगे? क्या हम किसी और संसार में, मृत्यु के द्वार के आगे किसी और अस्तित्व में प्रवेश करेंगे? यदि ऐसा है तो हमारा रूप कैसा होगा?''

हमारी नश्वरता

बाइबल सिखाती है कि परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र, और परमेश्वर पवित्र आत्मा के विपरीत जो अनश्वर है (1 तीमुथियुस 6:15, 16; 1:17 भी देखें), हम नश्वर हैं। यूनानी शब्द *thnetos* में दिखाई गई हमारी नश्वरता के निम्न हवालों को देखें: (1) ''पाप तुम्हारे *मरनहार*

शरीर में राज्य न करे'' (रोमियों 6:12); (2) मसीह ''तुम्हारी *मरनहार* देहों को भी जिलाएगा'' (रोमियों 8:11); (3) ''यह *मरनहार* देह अमरता को पहन ले'' (1 कुरिन्थियों 15:53); (4) ''यह *मरनहार* अमरता को पहन लेगा'' (1 कुरिन्थियों 15:54); (5) ''*मरनहार* शरीर'' (2 कुरिन्थियों 4:11); और (6) ''जो *मरनहार* है, जीवन में डूब जाए'' (2 कुरिन्थियों 5:4)। सभी हवालों में ''मरनहार'' शरीर को, यानी मनुष्य के शारीरिक भाग को कहा गया है। 1 कुरिन्थियों 15:53, 54 में कहा तो नहीं गया, पर संदर्भ से यह स्पष्ट है कि पौलुस ''मरनहार'' और ''नाशवान'' देह को ही कह रहा था। पहले उसने कहा था, ''शरीर नाशमान दशा में बोया जाता है और अविनाशी रूप में जी उठता है'' (1 कुरिन्थियों 15:42ख) और ''स्वाभाविक देह बोई जाती है, और आत्मिक देह जी उठती है'' (1 कुरिन्थियों 15:44क)।

हमारी जी उठी देहें अविनाशी होंगी (1 कुरिन्थियों 15:53, 54), जिसका अर्थ है कि अपनी वर्तमान स्थिति में वे नाशवान हैं। बाइबल जिसे नाशवान कहती है, वह हमारी वर्तमान देहें हैं, न कि भीतरी मनुष्य।

हमारी बनावट

अपनी बनावट के प्रति हमारे व्यवहार से आम तौर पर मरने पर क्या होगा, के विषय में हमारे निष्कर्ष प्रभावित होते हैं। यदि हमारा विश्वास है कि जो कुछ हम हैं, वह शरीर ही है, तो हमारा विश्वास यह हो सकता है कि मृत्यु पर हमारा अस्तित्व खत्म हो जाता है, कम से कम समय के उस स्थान में। दूसरी ओर यदि हमारा विश्वास है कि हमारी देहें हमारी बनावट का केवल *एक* पहलू हैं, तो हम यह विश्वास कर सकते हैं कि देहों की मृत्यु के बाद भी हम किसी रूप में अस्तित्व में रहेंगे।

परमेश्वर ने हमें ऐसे सृजा है: ''तब परमेश्वर ने ... अपने ही स्वरूप के अनुसार ... मनुष्यों की सृष्टि की'' (उत्पत्ति 1:27)। यदि हम केवल देह ही होते और वह देह परमेश्वर के स्वरूप में बनी होती, तो किसी न किसी रूप में हमें परमेश्वर जैसे दिखाई देना था। यदि ऐसा है, तो क्या परमेश्वर स्त्री या पुरुष जैसा है? क्या परमेश्वर का, जो कि आत्मा है (यूहन्ना 4:24) मुंह, दांत, पेट, टांगे और वैसी ही शारीरिक देह है, जैसी इस पृथ्वी पर जीने के लिए हमें चाहिए?

देह के बारे में पौलुस ने लिखा है, ''और जैसे हम ने उसका रूप जो मिट्टी का था, धारण किया, वैसे ही उस स्वर्गीय का रूप भी धारण करेंगे'' (1 कुरिन्थियों 15:49)। यदि हमारी शारीरिक देहों में पृथ्वी का स्वरूप और बाद में स्वर्गीय स्वरूप हो जाएगा, तो अब उनमें स्वर्गीय स्वरूप नहीं है। स्वर्गीय स्वरूप हमें जी उठने पर ही मिलेगा। जब परमेश्वर ने मनुष्यों को अपने स्वरूप पर बनाया, तो परमेश्वर के स्वरूप पर देह को *नहीं* बनाया गया था; वरना हम पहले से ही ''स्वर्गीय स्वरूप का रूप'' ले लेते। परमेश्वर आत्मा है, इसलिए मनुष्य की आत्मा परमेश्वर के स्वरूप पर ही *होनी चाहिए*। इससे यह सुझाव मिलता है कि प्रत्येक व्यक्ति में आत्मा है, जो अपने सृष्टिकर्त्ता के स्वरूप पर है।

पौलुस ने हमें देह, प्राण और आत्मा बताया है (1 थिस्सलुनीकियों 5:23)। परमेश्वर

का वचन प्राण और आत्मा, गांठ-गांठ और गूदे-गूदे को विभाजित कर सकता है (इब्रानियों 4:12)। यदि इन्हें विभाजित किया जा सकता है, तो इसका अर्थ है कि वे एक नहीं हैं।

इसी कारण, हमें निष्कर्ष निकालना होगा कि हम ''त्रिभागी'' हैं अर्थात तीन भागों से बने हैं। जैसे पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा (मत्ती 28:19) से एक परमेश्वर बनता है (यूहन्ना 10:30), वैसे ही देह, प्राण और आत्मा तीनों मिलकर एक व्यक्ति अर्थात व्यक्ति की पूरी बनावट बनते हैं।

कभी-कभी हमारे लिए प्राण और आत्मा में अन्तर करना कठिन हो सकता है। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि इनमें कोई अन्तर नहीं है। कुछ लोगों ने निष्कर्ष निकाला है कि हमारे अन्दर प्राण नहीं हैं, जो हमारे शरीरों में वास करते हैं, बल्कि ''प्राण'' ही आत्मा सहित पूर्ण व्यक्ति बनता है, जो श्वास या जीवन का बल और देह है।

यह मुद्दा ''प्राण'' शब्द के अनुवाद को जीवन या जो जीवित है, के लिए इस्तेमाल करने के कारण अस्पष्ट हो गया है। जीवितों में पशु (''जीवित प्राणी''; उत्पत्ति 1:20, 21, 24), मनुष्य (''जीवता प्राणी''; उत्पत्ति 2:7), और भीतरी मनुष्य (जिसे ''मेरा जी,'' ''उसका प्राण,'' ''तुम्हारा जीव,'' ''उसका दम'' कहा गया है; उत्पत्ति 27:4; 35:18; लैव्यव्यवस्था 16:29; लूका 12:20; न्यायियों 16:16)। एक और जटिलता पैदा होती है, क्योंकि ''आत्मा'' का अर्थ एक अदृश्य बल है, चाहे यह वायु हो, आत्मा या श्वास।

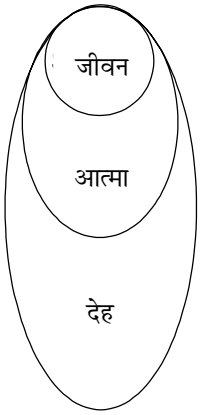

मनुष्य की तिहरी रचना

देह

देह हमारी बनावट का नाशवान भाग है और इसे ''मरनहार या नश्वर शरीर'' (रोमियों 6:12), ''मरनहार शरीर'' (2 कुरिन्थियों 4:11), ''बाहरी मनुष्यत्व'' (2 कुरिन्थियों 4:16) और ''पृथ्वी पर का डेरा'' (2 कुरिन्थियों 5:1) कहा गया है।

हमारी देहें पृथ्वी पर हमारे शरीर के निवास हैं जिन में हम रहते हैं। उनसे हमारा भौतिक अस्तित्व होता है।

प्राण

इब्रानी शब्द *nephesh* और यूनानी शब्द *psuche* जिनका अनुवाद ''प्राण'' हुआ है, के अलग-अलग अर्थ हो सकते हैं। केवल संदर्भ से ही पता चल सकता है कि उनका अनुवाद कैसे होना चाहिए। अंग्रेज़ी के किंग जेम्स वर्ज़न में *नेफ़ेश* का अनुवाद उन्नतीस अलग-अलग तरह से किया गया है। *Nephesh* (*नेफ़ेश*) के समानान्तर यूनानी शब्द *psuche (स्यूक)* का अनुवाद भी कई तरह से हुआ है।

अनुवादित हुए शब्द ''प्राण'' या soul का इस्तेमाल एक पूर्ण व्यक्ति के लिए अलग अलग तरह से होता है (1 पतरस 3:20)। यही शब्द सहित जीवन (मत्ती 2:20; 6:25) या भीतरी व्यक्ति (मत्ती 10:28) के लिए भावनाओं (मरकुस 14:34; यूहन्ना 12:27), कारण (लूका 12:19), और आराधना (लूका 1:46) इसके आत्मिक कार्यों के लिए इस्तेमाल किए जा सकते हैं। परमेश्वर भी अपने मन की बात करता है (मत्ती 12:18; इब्रानियों 10:38)।

आत्मा

बाइबल में इब्रानी शब्द *ruach* और यूनानी शब्द *pneuma* जिसका अधिकतर अनुवाद ''आत्मा'' होता है, अभौतिक लगने वाले हवा (उत्पत्ति 8:1; यूहन्ना 3:8), श्वास (उत्पत्ति 6:17), आत्मिक जीव (जकर्याह 6:5; यूहन्ना 4:24; इब्रानियों 1:14), भीतरी गुण (निर्गमन 28:3; 1 कुरिन्थियों 4:21) या मनुष्य की आत्मा (उत्पत्ति 45:27; 1 कुरिन्थियों 2:11) को अलग दिखाया गया है।

आत्मा प्राण से अलग है। ''प्राण'' का अर्थ सम्पूर्ण व्यक्ति (देह और आत्मा सहित) जीवन या भीतरी मनुष्य (बाहरी मनुष्य अर्थात देह के विपरीत; 2 कुरिन्थियों 4:16) हो सकता है। आत्मा, मनुष्य का वह भाग जो विशेष रूप से शारीरिक देह से अलग है, वह भाग है, जो मानवीय गर्भ में हमारे पड़ने के समय परमेश्वर द्वारा हमें दिया गया (सभोपदेशक 12:7; जकर्याह 12:1; इब्रानियों 12:9), परमेश्वर की तरह अभौतिक बनावट है (यूहन्ना 4:24)।

हमारी देहें हमारा भौतिक, पशु वाला भाग हैं, जो इस वर्तमान सांसारिक अवस्था के साथ हमारी पहचान है। ''प्राण'' का अर्थ आम तौर पर देह में रहने वाला व्यक्ति होता है: ''आप'' या ''मैं।'' शरीर में रहते हुए, हमारी देहें हमारा सांसारिक निवास हैं। प्रत्येक जीवित प्राणी में देह है, जो उसका शारीरिक पहलू है, और आत्मा है, जो अदृश्य, अभौतिक और मनुष्य की बनावट का परमेश्वर के स्वरूप वाला भाग है। केवल देह की ही बात करने पर हम प्राण और आत्मा की बात नहीं कर रहे होते। आत्मा की बात करते समय हम देह की बात नहीं कर रहे होते। प्राण की बात करते समय हमारे कहने का अर्थ ''आप'' या ''मैं'' यानी वह भीतरी मनुष्य हो सकता है, जो देह में वास करता है (2 कुरिन्थियों 4:16)। हर व्यक्ति के पास देह है, पर हम केवल देह ही नहीं हैं। हम में से हर एक में आत्मा है, पर हम आत्मा से कहीं बढ़कर हैं। हमें प्राणी, जीवित व्यक्ति या जिनके प्राण हैं, शारीरिक देहों में जीवित अस्तित्व वाले कहा जा सकता है।

सारांश

मनुष्य की रचना तीन भागों अर्थात देह, प्राण और आत्मा से हुई है। इस कारण, देह की मृत्यु प्राण और आत्मा की मृत्यु नहीं होगी, जो हम सब में है। हमारे शारीरिक कार्य मृत्यु के समय बन्द हो जाएंगे, पर प्राण और आत्मा देह से बाहर रहकर, भी अस्तित्व में रहेंगे।